

ज्ञान का अक्षय भंडार वेद

भारतीय वाङ्मय का आदि-स्रोत वेद है, जो ब्रह्मा के श्वास से उत्पन्न माना जाता है। इस कारण इसे अपौरुषेय एवं अनादि कहा जाता है। वेद 'विद्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है ज्ञान। वेद ज्ञान का अक्षय भंडार है और सृष्टि के प्रारंभ में ही इसका आविर्भाव हुआ था। पहले वेद तीन ही थे, बाद में वेद चार हुए। ऋक्, यजुः, साम और अथर्व- ये चार वेद हैं, जिनमें से ऋग्वेद को अति प्राचीन माना जाता है। वेद

भारतीय धर्म की आधार-शिला है। वेद विहित कार्य धर्म है और वेद विरुद्ध कार्य अधर्म है। विषय की दृष्टि से वेद के दो भाग हैं - कर्म काण्ड और ज्ञान काण्ड। संहिता, ब्राह्मण तथा आरण्यक में कर्मकाण्ड की विवेचना है तो उपनिषद् का संबंध ज्ञानकाण्ड से है। वेदों में प्राकृतिक वस्तुओं को देवता मान कर उनकी उपासना की गयी है। साथ ही इस जगत् में व्याप्त एक अलौकिक सत्ता का भी पता वैदिक ऋषियों ने लगाया था। इसमें

आत्मा का स्वरूप, सृष्टि, कर्मफल आदि पर सविस्तार विचार किया गया है। वेद की इस संपूर्णता के कारण मनु ने कहा है- "सर्व वेदात् प्रसिद्धयति।" ईश्वर ने वेद ब्रह्मा को दिया और उनके श्वास से निकले वेद को ऋषियों ने छन्दोमय वाणी में अभिव्यक्त किया। यह श्रुति रूप में कुल-परंपरा से चला आया, इस कारण इसे श्रुति भी कहते हैं। इसे विभक्त कर संग्रहीत करने का श्रेय महर्षि व्यास को प्राप्त है।